delhi_Page 1 and 2 14/04/2015 09:37 Page 9

कथा सरिता

चार आशीर्वाद

किसी जंगल में एक शिकारी जा रहा था। रास्ते में घोड़े पर सवार एक राजकुमार उसको मिला। वह भी उसके साथ चल पड़ा। आगे उनको एक तपस्वी और साधु मिले। वे दोनों भी उनके साथ चल दिए। चारो आदमी जंगल में जा रहे थे। आगे उनको एक कुटिया दिखाई दी। उसमें एक बूढ़े बाबाजी बैठे थे। चारों आदमी कुटिया के भीतर गए और बाबाजी को प्रणाम किया। बाबाजी ने उन चारो को चार आशीर्वाद दिए। बाबाजी ने राजकुमार से कहा-'राजपुत्र! तुम चिरंजीव रहो!' तपस्वी से कहा-'ऋषिपुत्र! तुम मत जीओ।' साधु से कहा-'तुम चाहे जीओ, चाहे मरो, जैसी तुम्हारी मरजी!' शिकारी से कहा-'तुम न जीओ, न मरो!' बाबाजी चारो को आशीर्वाद देकर चुप हो गए। चारो आदमियों को बाबाजी का आशीर्वाद समझ में नहीं आया। उन्होंने प्रार्थना की कि कृपा करके अपने आशीर्वाद का तात्पर्य समझाएं। बाबाजी बोले-'राजा को नरक में जाना पड़ता है। मनुष्य पहले तप करता है, तप के प्रभाव से राजा बनता है और फिर राज पाट संभालते हुए उसे कई पाप करने पड़ते हैं। मर कर नरक में जाता है, 'तपेश्वरी सो राजेश्वरी, राजेश्वरी सो नरकेश्वरी'! इसलिए मैंने राजकुमार को सदा जीते रहने का आशीर्वाद दिया। जीता रहेगा तो सुख पाएगा। तपस्या करने वाला जीता रहेगा तो तप करके शरीर को कष्ट देता रहेगा। वह मर जाएगा तो तपस्या के प्रभाव से स्वर्ग में जाएगा अथवा राजा बनेगा। इसलिए उसको मर जाने का आशीर्वाद दिया, जिससे वह सुख पाए। साधु जीता रहेगा तो भजन-स्मरण करेगा, दूसरों का उपकार करेगा और मर जाएगा तो भगवान के पास जाएगा। वह जीता रहे तो भी आनन्द है, मर जाए तो भी आनन्द है। इसलिए मैंने उसको आशीर्वाद दिया कि तुम जीओ, चाहे मरो, तुम्हारी मरजी! शिकारी दिनभर जीवों को मारता है। वह जीएगा तो जीवों को मारेगा और मरेगा तो नरक में जाएगा। इसलिए मैंने कहा कि तुम न जीओ, न मरो! चारो लोगों को बाबाजी का आशीर्वाद समझ में आया और वे प्रणाम करके चले गए।

एक दिन का राजा

एक आश्रम में राजकुमार के साथ दो श्रेष्ठि पुत्र पढ़ते थे। अध्ययन के अंतिम वर्ष में श्रेष्ठि पुत्र राजकुमार से अलग रहने लगे। राजकुमार ने कारण जानना चाहा तो श्रेष्ठि पुत्रों ने कहा-'राजकुमार आप राजपुत्र हैं। निकट भविष्य में आप राज्य के राजा बनेंगे। हमें तो व्यापार-धंधा करके ही काम चलाना पड़ेगा। कहाँ आप और कहाँ हम सामान्य लोग। आपसे दूरी बनी रहे यही ठीक है।' राजकुमार ने कहा-'तुम मेरे मित्र हो। मित्रता रहेगी तो कभी तुम मुझसे कहना, मैं एक दिन का राजा तुमको भी बना दूंगा।' तीनों मित्र बहुत प्रसन्न हुए। शिक्षा पूरी कर अपने-अपने नगर लौट गए। कुछ वर्ष बाद राजकुमार राजा बन गया। उधर श्रेष्ठि पुत्र भी अपने नगर के सेठ कहलाने लगे। समय निकलता गया। एक दिन प्रथम श्रेष्ठिपुत्र को अपने राजकुमार मित्र का स्मरण हो आया। वह उसके पास पहुँचा और दिए हुए वचन की याद दिलाई। राजा ने कहा-'ठीक है आज दिन भर तुम राज करो।' श्रेष्ठि पुत्र ने सबसे पहले कोषाध्यक्ष को बुलाकर खज़ाने की जांच की और अपने सभी मांगने वालों को बुलवाकर कहा-'जितना मांगते हो खज़ाने से ले लो।' सभी प्रसन्न थे। उनकी राशि उन्हें मिल गई थी। बहुत-सा धन उसने अच्छे कामों में लगाया। कुछ अपने घर भिजवाकर पुनः संपन्न हो गया। एक दिन के शासन में वह पूर्ण सफल रहा। राजा को अपने वचन पालन हेतु धन्यवाद दिया। कुछ दिनों बाद दूसरे श्रेष्ठिपुत्र का व्यापार भी डगमगा गया। वह भी अपने राजकुमार मित्र के पास पहुँचा और दिया हुआ वचन याद दिलाया। राजा ने कहा-'कल इस नगर के राजा तुम बन जाना।' श्रेष्ठि पुत्र बहुत प्रसन्न हुआ। सवेरे सेवकों से दाढ़ी बाल बनवाए। मालिश करवाई। स्नान किया। राजसी वेश-भूषा पहनी फिर भोजशाला में डटकर राजसी भोजन किया। इस पर नींद के झोंके आने लगे तो सोचा कुछ समय आराम कर लूं फिर राज सभा में जाऊंगा। नींद खुली तो देखा सूर्य अस्ताचल में जा रहा है। वह घबराया। जब तक कुछ निर्णय कर पाता, शाम हो चुकी थी। वह जैसा गया, वैसा ही राजभवन से बाहर आ गया। इसलिए ठीक ही कहा गया है कि जो वक्त की कद्र नहीं करता है वक्त भी उनकी कद्र नहीं करता है।

दर्द और दुआ

एक नगरी में राजा सोमदेव राज करता था। राजा की कोई संतान नहीं थी। एक दिन राजा ने सुना कि एक रमता जोगी उनके राज्य के जंगलों से गुज़र रहा है। उसे कई सिद्धियां प्राप्त हैं, वे आशीर्वाद दें तो राजा को पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। राजा ने यह बात रानी को बताई और दोनों तुरंत जोगी से आशीर्वाद लेने के लिए निकल पड़े। जोगी ने भविष्य की टोह लेते हुए कहा 'मैं तुम्हारे पुत्र का योग तो बना सकता हूँ लेकिन यह भी सच है कि उस पुत्र की गति अच्छी नहीं होगी। वह दुराचारी और मद्यपान करने वाला होगा, होनहार और तेजस्वी नहीं।' राजा ने जब यह बात सुनी तो हाथ जोड़ते हुए कहा 'जोगी बाबा, फिर आप मुझे निपूता ही रहने दें।' लेकिन रानी नहीं मानी, बोली 'आपको निपूता कहलाते दुःख हो या नहीं लेकिन बांझ कहलाने का दंश मुझे सहन नहीं होता। पुत्र चाहे कैसा भी हो, होगा तो मेरा पुत्र ही।' रानी के आगे राजा की एक नहीं चली और जोगी ने रानी की मंशा के अनुसार पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद दे दिया। समय आने पर राजा-रानी के आंगन में एक बालक खेलने लगा। उसे देव नाम दिया गया। रानी उसे बहुत लाड़-प्यार से रखती लेकिन राजा को देव और प्रजा के भविष्य की चिंता खाए जाती। बड़ा होने के बाद देव में वे सभी लक्षण दिखने लगे जो योगी ने बताए थे। खूब मद्यपान करता और व्यभिचार करता। नगर में उसका आतंक फैल गया था। वह माता-पिता से भी अपशब्द कहने से नहीं चूकता। एक दिन उसके पेट में भयंकर दर्द उठा जो ठीक ही नहीं होता था। वैद्यों ने सारे उपाय आजमा लिये, आखिरकार किसी ने कहा कि वह जोगी फिर रमता हुआ नगर के द्वार पर आया है। रानी तुरंत जोगी के पास पहुँची और पुत्र की व्यथा दूर करने की गुहार करने लगी। जोगी ने कहा, 'तुम्हारे पुत्र ने प्रजा पर अत्याचार कर बहुत आहें जमा कर ली हैं जो अब कराहों में निकल रही है। दुराचारी का यही अंत होता है। यह दर्द लंबे समय तक भोगना होगा।' जोगी ने अपनी राह ली, उधर देव अपने किए का पश्चाताप करने लगा। धीरे-धीरे प्रजा को भी देव पर दया आने लगी और समय के साथ-साथ देव का दर्द कम होता चला गया। एक दिन वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया और अतीत की गलतियां उसने फिर नहीं दोहराईं।

झूठी धमकी

रोजन गांव में एक पंडित रोज़ बात-बात पर पत्नी से झगड़ता था। वह उससे कहता-'मेरी बात नहीं मानोगी तो संतों की शरण में चला जाऊंगा। फिर तुम अकेली दुर्दशा भोगोगी।' पत्नी पति की रोज़-रोज़ की धमकी से परेशान थी। एक दिन एक संत उनके घर भिक्षार्थ आए। पंडित की पत्नी ने अपनी राम कहानी उन्हें सुनाकर दया की प्रार्थना की। संत ने कहा-'अब जब कभी वह ऐसा कहे, तब तुम साफ कह देना कि अभी जाइए। फिर जब मेरे पास आएगा, मैं मंत्र फूंक दूंगा, फिर वह तुम्हारे वश में हो जाएगा।'

संत चले गए। पतिदेव आए। भोजन में विलम्ब देख बिगड़ने लगे और अपना रटा-रटाया अस्त्र चलाया-'यदि ऐसा ही करोगी तो मैं जंगल में जाकर संत बन जाऊंगा।' पत्नी ने कहा-'देर क्यों? इसी वक्त चले जाइए।' पंडित सोच में पड़ गया। पगड़ी-कुरता पहन निकल पड़ा। संत के पास जाकर उनसे शिष्य बनाने की प्रार्थना की। संत ने उसकी बात स्वीकार कर ली। संत ने आदेश दिया कि तूंबा भर जल लाने नदी पर जाओ। इस बीच संत ने उसके सारे कपड़े फाड़कर पेड़ पर लटका दिए। नदी से लौटने पर संत ने उसे लंगोटी पहनाई। संत कंद-मूल खाने लगे। पंडित को भी वही सब कुछ दिया गया। खाते हुए उसे लगा कि कुछ कड़वा लग रहा है। पंडित ने कहा कुछ मीठी चीज़ दीजिए। संत ने पास के पेड़ से नीम की कड़वी पत्तियां तोड़कर दीं। पंडित को जबरन खाने को कहा। पंडित उसे मुँह में रखते ही दुःखी हो उठा। उसने सोचा-घर पर सूखी रोटी तो मिलती थी, मैंने यह विपत्ति क्यों मोल ली। वह पछताने लगा। उसकी यह मनः स्थिति देखकर संत ने कहा-'जब वैराग्य का यह पहला पाठ पढ़ने में ही तुम पछताने लगे, फिर घर में रहकर पत्नी को क्यों परेशान करते हो। बार-बार संत बनने का डर दिखाकर पत्नी को क्यों छलते हो। संत बनना इतना सहज है?' पंडित ने क्षमा मांगी और भविष्य में पत्नी को कभी ऐसा नहीं कहने की प्रतिज्ञा की।

अमृतसर-पंजाब। 'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्वराज ग्रोवर,डायरेक्टर,जन कल्याण संगठन एंड फैमिली काउंसलिंग सेल, निज़ार जुमा, एंथनी फिलीप्स, हीथर कारा,यू.एस.ए., ब्र.कु. जयन्ती, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. आदर्श व अन्य गणमान्य जन।

असंसोल-ओडिशा। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए लायन्स क्लब अध्यक्षा अंजली भट्टाचार्य, एडवोकेट सुमिता मालकोदिया रॉय, डॉ. रतना भंडारिया, ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. संध्या।

बड़ौत। शिव जयंती पर ध्वजारोहणे के पश्चात् सर्कल ऑफिसर सी.पी. सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहिनी।

भैरहवा-नेपाल। शिव जयंती कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शान्ति। मंचासीन हैं प्रमुख जिलाधिकारी तोयम रायमाझी, एस.पी. गुनाखर खनाल, वरिष्ठ पत्रकार दिलीप भट्टराई, कर्नल गोपाल अर्याल, समाजसेवी दीपक क्षेत्री, व्यापार मंडल के अध्यक्ष विष्णु शर्मा, ब्र.कु. भूपेन्द्र व अन्य।

डाल्टनगंज-झारखण्ड। महाशिवरात्रि पर आयोजित कलश यात्रा में उपस्थित हैं ब्र.कु. बहनें व अन्य भाई बहन।

गया-ए.पी. कॉलोनी। बुद्धिष्ठों को राजयोग का अभ्यास कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुनीता।